एस• एस• कॉलेज जहानाबाद।

विभाग - हिन्दी

विषय :- हिन्दी रचना पत्र

वर्ग - स्नातक भाग - 1.

शिक्षण माध्यम - व्हाट्स - एप

समय 11 बजे से 12 बजे तक, 24.8.2020

शिक्षक - डॉ• रमेश शर्मा

पाठ - पल्लवन

प्रिय - छात्र - छात्राएँ !

पिछली कक्षा में ~~हमलोगों~~ के पल्लवन पर चर्चा की गई थी। इस चर्चा में यह भी देखा गया था कि पल्लवन व्याख्या और भावार्थ से अलग है। किसी उक्ति को पल्लवित करने के भी कुछ नियम हैं - जिसे समझने के बाद ही पल्लवित करने की कोशिश करनी चाहिए।

1. सर्वप्रथम पल्लवन के लिए मूल अवतरण के वाक्य, सूक्ति, लोकोक्ति, अथवा कहावत को ध्यान पूर्वक पढ़ना चाहिए ताकि किसी सूक्ति या कहावत का मूल भाव मानस पटल पर पूर्णतः स्पष्ट होना चाहिए।

2. इसके बाद मूल भाव या विचार के तहत छुपे सहायक विचारों, भावों को समझने की चेष्टा करनी चाहिए।

3. मूल और गौण भावों और विचारों को समझ लेने के बाद एक - एक कर सभी निहित विचारों को एक-एक अनुच्छेद (Paragraph) में लिखने की कोशिश कीजिए ताकि कोई भी भाव अथवा विचार छूटे

नहीं।

4. अर्थ अथवा विचार का विस्तार करते समय उसकी पुष्टि में जहाँ-तहाँ अलग से भी उदाहरण और तथ्य दिये जा सकते हैं।

5. भाव और भाषा की अभिव्यक्ति में पूरी स्पष्टता, मौलिकता और सरलता होनी चाहिए। अलंकृत भाषा या पुनरावृत्ति से बचना चाहिए।

6. पल्लवन के लेखन में अप्रासंगिक विचारों का अनावश्यक विस्तार का उल्लेख कभी नहीं करना चाहिए।

7. पल्लवन में मूल भाव को विस्तार देते समय किसी प्रकार की टीका-टिप्पणी या आलोचनात्मक भावों का उल्लेख नहीं करना चाहिए।

8. पल्लवन की रचना हर-हालत में अन्य पुरुष में होनी चाहिए।

9. इसप्रकार पल्लवन व्यास शैली की होनी चाहिए, समास शैली की नहीं। अतः इसमें विस्तार से लिखने का अभ्यास करना चाहिए। आपके अभ्यास के लिए एक सूत्रवाक्य दिया जा रहा है ——
'साहित्य समाज का दर्पण होता है।' पल्लवित करें।

(Signature)
24.8.20.